ISSN 0975-8321

वाङ्मय

(त्रैमासिक हिन्दी पत्रिका)

Peer Reviewed Journal
(Impact Factor 5.125)

अतिथि सम्पादक
डॉ. शगुफ्ता नियाज़

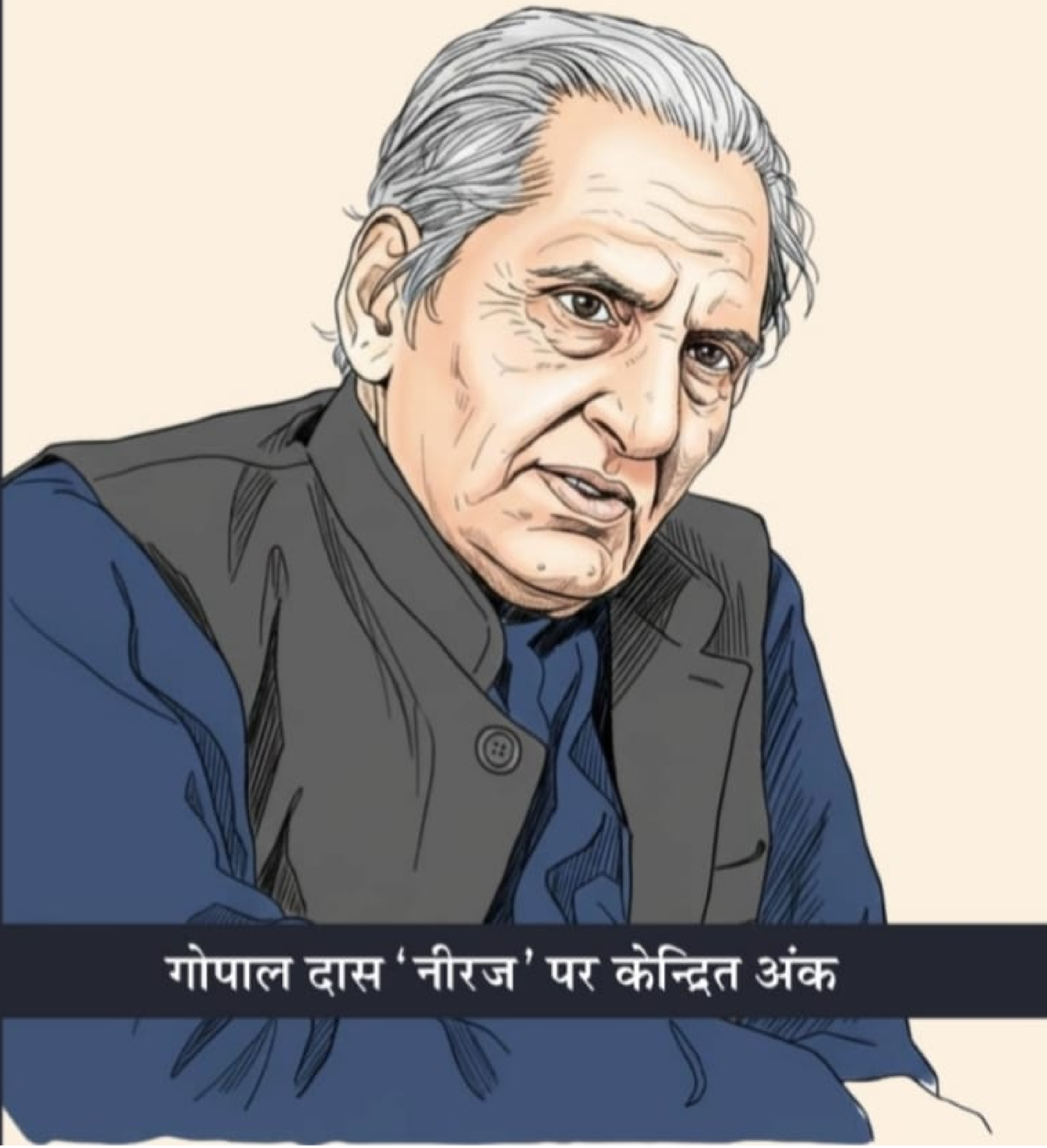

गोपाल दास 'नीरज' पर केन्द्रित अंक

ISSN 0975-8321

वाङ्मय त्रैमासिक

वर्ष : 24 अक्टूबर 2025–मार्च 2026 (संयुक्तांक)

सम्पादक
डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद
मोबाइल : ९०४४९१८६७०

सलाहकार सम्पादक
प्रो. मेराज अहमद
(ए.एम.यू. अलीगढ़)

परामर्श मण्डल
प्रो. रामकली सराफ(वाराणसी)
डॉ. शगुफ़्ता नियाज़ (अलीगढ़)

सम्पादकीय सम्पर्क
205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी,
नियर पान वाली कोठी,
दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002
मोबाइल : 7007606806
E-mail : vangmaya@gmail.com

इस अंक का मूल्य–300/–

सहयोग राशि :
द्विवार्षिक शुल्क व्यक्तिगत/संस्थाओं के लिए : 800 रुपए

सह–सम्पादक
डॉ. मोहम्मद आसिफ खान

पुनरावलोकन समिति :
• प्रो. मेराज अहमद, हिन्दी विभाग, ए.एम.यू. अलीगढ़
• प्रो. इकरार अहमद, प्राचार्य, विवेकानंद ग्रामद्योग महाविद्यालय, दिबियापुर, औरैया

कानूनी सलाहकार
एम. एच. खान, एडवोकेट(हाईकोर्ट, इलाहाबाद)
एम. ए. खान, एडवोकेट(हाईकोर्ट, इलाहाबाद)

सम्पादन/संचालन
अनियतकालीन, अवैतनिक और अव्यावसायिक।
रचनाकार की रचनाएँ उसके अपने विचार हैं।
रचनाओं पर कोई आर्थिक मानदेय नहीं दिया जाएगा।
लेखकों, सदस्यों एवं मित्रों के आर्थिक सहयोग से पत्रिका प्रकाशित होती है।
उनसे सम्पादक-प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र अलीगढ़ होगा।

रचनाकारों से......

○ रचनाएँ कृतिदेव 10 में टाइप कराकर ही भेजें। ○ रचनाओं के साथ पोस्टकार्ड होने पर ही प्राप्ति की सूचना भेजी जाएगी। ○ डाक टिकट लगा लिफाफा साथ आने पर ही अस्वीकृति रचना लौटायी जा सकती है अन्यथा नष्ट कर दी जाएगी। ○ कृतियों की समीक्षा के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजना अनिवार्य है। ○ नमूना प्रति अवलोकन के लिए 300 रुपये भेजना अनिवार्य है। ○ हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं की रचनाओं का वाङ्मय स्वागत करता है।

शुल्क भेजने का पता

मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट : *'डॉ. फ़ीरोज़ अहमद' या 'वाङ्मय'* के नाम

205- फेज-1, ओहद रेजीडेंसी, नियर पान वाली कोठी, दोदपुर रोड, सिविल लाइन, अलीगढ़-202002

डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद की ओर से डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद द्वारा प्रकाशित, डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद द्वारा मुद्रित तथा नवमान आफसेट प्रिंटर्स अलीगढ़ में मुद्रित एवं ई-3, अब्दुल्लाह क्वार्टर्स, लाल बहादुर शास्त्री मार्ग अलीगढ़ से प्रकाशित।

सम्पादक- डॉ. एम. फ़ीरोज़ अहमद

सम्पादकीय

पद्‌मभूषण गोपालदास 'नीरज' जी की जन्मशती का यह पावन अवसर केवल एक तिथि का स्मरण नहीं, बल्कि शब्द और स्वर के उस महाकुंभ का उत्सव है जिसने आधी सदी से भी अधिक समय तक हिंदी काव्य-चेतना को आलोकित किया। 'वाङ्‌मय' का यह विशेषांक उनके विराट व्यक्तित्व, कालजयी कृतित्त्व और उन अनछुए ऐतिहासिक प्रसंगों को समर्पित है, जो अब तक साहित्य की मुख्यधारा की चर्चाओं से ओझल रहे थे।

साहित्यिक जगत् और शोध के क्षेत्र में नीरज जी की जन्मतिथि को लेकर एक लम्बा विरोधाभास रहा है। कहीं यह 8 फरवरी 1926 अंकित है, तो कहीं 4 जनवरी 1925। इस ऐतिहासिक विसंगति को दूर करना इस विशेषांक का प्राथमिक उद्‌देश्य है। जनवरी 1977 में अलीगढ़ से प्रकाशित पत्रिका 'रंजिनी' के संपादक सुरेश कुमार जी ने उनके जीवनकाल में ही यह स्पष्ट कर दिया था कि जन्मपत्री के अनुसार उनकी वास्तविक जन्मतिथि 4 जनवरी 1925 ही है। शोधार्थियों और भविष्य के इतिहासकारों से यह विनम्र अनुरोध है कि वे इस प्रमाणिक संदर्भ और 'रंजिनी' के विवरण को आधार मानकर ही अपनी स्थापनाएं प्रस्तुत करें।

नीरज जी आधुनिक हिंदी साहित्य के वे विरल हस्ताक्षर थे, जिन्होंने मंचों की लोकप्रियता और काव्य की शास्त्रीय गरिमा के बीच एक अभूतपूर्व सेतु का निर्माण किया। वे महज एक कवि नहीं, बल्कि एक युग की आवाज़ थे। हिंदी साहित्य के इतिहास में वे संभवतः प्रथम ऐसे साहित्यकार रहे, जिन्हें भारत सरकार और विभिन्न संस्थाओं द्वारा शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में 22 बार सम्मानित किया गया। पद्‌मश्री (1991) और पद्‌मभूषण (2007) के अलंकरणों के साथ-साथ फ़िल्मों में उनके गीतों के लिए लगातार तीन बार प्राप्त फ़िल्मफेयर पुरस्कार उनकी सृजनात्मक विविधता का प्रमाण हैं।

उनकी काव्य-शक्ति का लोहा उनके धुर विरोधी विचारधारा वाले कवियों ने भी माना। वर्ष 1966 में भारतीय संस्कृति परिषद, कोलकाता की एक गोष्ठी में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने भावुक होकर कहा था "यदि खड़ी बोली के गीतों को लोकप्रिय होकर जनमानस में अपना स्थान बनाना है, तो उनकी भाषा और ध्वनि नीरज की-सी होनी चाहिए।" यह वक्तव्य नीरज जी की भाषाई पकड़ और उनके गीतों की सहज स्वीकार्यता

पर सबसे बड़ी मोहर है। यहाँ तक कि 'तार सप्तक' के प्रखर और बौद्धिक कवि गजानन माधव 'मुक्तिबोध' ने अपनी डायरी में नीरज जी को अपना 'प्रिय कवि' स्वीकार किया है, जो यह सिद्ध करता है कि नीरज जी केवल लोकप्रिय ही नहीं बल्कि वैचारिक रूप से भी अत्यंत गहरे थे।

यह विशेषांक नीरज जी के उन दुर्लभ कार्यों पर भी प्रकाश डालता है, जिनसे शोधजगत् प्रायः अनभिज्ञ रहा है। मिसाल के तौर पर, कथाकार राही मासूम रज़ा के महाकाव्य 'अठारह सौ सत्तावन' (1965) की भूमिका नीरज जी ने लिखी थी। यह एक ऐसा तथ्य है जिसकी जानकारी राही जी पर शोध करने वालों को भी नहीं थी। इसके अतिरिक्त, नीरज जी का ज्योतिष प्रेम और उनकी कृति 'ज्योतिष काव्यांजलि' उनके व्यक्तित्व के उस पारलौकिक पक्ष को उजागर करती है, जहाँ वे समय की सीमाओं को लांघकर भविष्य को देख पाने की क्षमता रखते थे। अपनी और अटल जी की आयु को लेकर उनके द्वारा किए गए ज्योतिषीय आकलन आज भी लोगों को विस्मित कर देते हैं।

नीरज जी का अलीगढ़ से जुड़ाव केवल निवास तक सीमित नहीं था, अपितु यह उनकी साधना स्थली और कर्मभूमि रही। धर्म समाज कॉलेज में प्राध्यापक से लेकर अलीगढ़ की राजकीय प्रदर्शनी में स्थापित उनकी भव्य प्रतिमा तक, उनकी उपस्थिति इस शहर के कण-कण में है। रघुवीर सहाय इंटर कॉलेज (पूर्व के. पी. कॉलेज) में स्थापित पद्मभूषण डॉ. गोपालदास नीरज संग्रहालय आज उनकी स्मृतियों का तीर्थ बन चुका है। वहाँ संरक्षित उनके वस्त्र, पुस्तकें, टाइपराइटर और यहाँ तक कि उनकी व्हीलचेयर भी उस संघर्षशील जीवन की कहानी कहती है, जिसने अभावों से निकलकर आकाश की ऊँचाइयों को छुआ।

उनके जीवन के अंतिम कालखंड में व्याप्त वह 'विषाद-बोध' भी अत्यंत मर्मस्पर्शी है, जिसने उन्हें तत्कालीन जिलाधिकारी को इच्छा-मृत्यु तक के लिए पत्र लिखने पर विवश किया। उनके गीतों में जो विरह और करुणा है, वह इसी जीवन दर्शन से उपजी है।

इस विशेषांक के माध्यम से हम 'लय' पत्रिका के कुछ महत्त्वपूर्ण संपादकीय और उनके द्वारा लिखी गई विविध भूमिकाओं को पुनः प्रकाशित कर रहे हैं, ताकि आने वाली पीढ़ी के शोधार्थियों को नई सामग्री और नई दृष्टि मिल सके। इस पुनीत कार्य में सहयोग देने वाले सभी लेखकों, विद्यार्थियों और प्रिंसिपल प्रदीप जी और प्रबंधक अशोक जी का मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

नीरज जी के शब्दों में कहें तो ''इतना तो मैंने सीखा है मर-मर के जीने वालों से, यदि तुमको जीना है तो फिर मरना भी तो सीखो तुम।'' उनकी यह जन्मशती उनके इसी अजेय जीवन-दर्शन को हमारा नमन है।

अलीगढ़ **शगुफ़्ता**

अनुक्रम

सम्पादकीय/3

खण्ड-क (शोध आलेख/आलेख/समीक्षा)

1. कोई बात तो है नीरज के गुनगुनाने में/9
शिवचंद प्रसाद
2. कवि गोपालदास नीरज का सृजनात्मक चिंतन/31
डॉ. रमेश कुमार
3. भूमिका/39
क्षेमचन्द्र 'सुमन'
4. नीरज/58
ललित मोहन अवस्थी
5. गोपालदास नीरज/67
विश्वम्भर 'मानव'
6. नीरज/73
नरेशचन्द्र चतुर्वेदी
7. गोपालदास नीरज : लोकप्रियता का शिखर कवि/76
शेरजंग गर्ग
8. रामघाट पर सुबह गुजारी, प्रेम घाट पर रात कटी : नीरज/82
प्रताप राव कदम
9. गोपालदास नीरज : आँसुओं की आरती उतारते गीत/88
वेदप्रकाश अमिताभ
10. नीरज के प्रेमगीत : नव्य आयाम/93
डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय

11. गोपालदास नीरज : ऐ भाई जरा देख के चलो/101
देवमणि पाण्डेय
12. प्रियतम के प्रति प्रचित प्रेम के पत्र/106
डॉ. नितिन सेठी
13. गोपालदास 'नीरज' का काव्य-दर्शन : सरलता में गहराई, करुणा में क्रान्ति/116
डॉ. महेंद्र कुमार वर्मा
14. गोपालदास 'नीरज' के काव्य में मानवता के स्वर की अभिव्यक्ति/124
डॉ. प्रीति सिंह
15. नीरज की कविताओं में अभिव्यक्त विश्व प्रेम/133
डॉ. शगुफ़्ता नियाज़
16. आज की घृणा और विद्वेष के बीच नीरज और उनकी ग़ज़लों की मौजूदगी !/143
डॉ. पवन कुमार रावत
17. पद्मभूषण गोपालदास नीरज/150
डॉ. कमल सिंह
18. सिनेमा और साहित्य का संगम : गोपालदास नीरज/163
फ़िरदौस
19. गोपालदास नीरज के काव्य में मानवीय संवेदना के विविध आयाम/169
शाइस्ता सना
20. गोपालदास नीरज के काव्य में सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदना/176
वेदप्रकाश भारती
21. प्राण-गीत/183
प्रकाशचन्द्र गुप्त

खण्ड-ख (सम्पादकीय/भूमिका/संस्मरण/साक्षात्कार)

22. सम्पादकीय-1/187
23. सम्पादकीय-2/189
24. सम्पादकीय-3/193
25. सम्पादकीय-4/196
26. सम्पादकीय-5/198

27. भूमिका–1/202
28. भूमिका–2/204
29. गीत : स्वरूप और सिद्धान्त/207
नीरज
30. प्राक्कथन/214
31. अपनी बात.../222
32. इस संग्रह के सम्बन्ध में/224
33. आप से/225
34. कवि की कलम से.../226
35. इन पत्रों के संबंध में/227
36. दृष्टिकोण/231
नीरज
37. हलाहल और मधुशाला के बीच/247
नीरज
38. ग़ज़ल : एक दृष्टि/250
नीरज
39. साहित्यानुशीलन के नए क्षितिज/256
नीरज
40. दोहा : तब और अब/258
नीरज
41. राबिन शॉ पुष्प की कहानियाँ/188
नीरज
42. गोपालदास नीरज : गीतों के मधुबन में मधुमास/263
आनन्दप्रकाश त्रिपाठी
43. गीतऋषि पद्मभूषण नीरज : कुछ खट्टी कुछ मीठी यादें/276
अशोक 'अंजुम'
44. नीरज : एक यादगार बातचीत/284
प्रेमकुमार
45. जीवन का अध्यात्म गाया है मैंने गीतों में– 'नीरज'/301
46. 'कवि सम्मेलनों में ठेकेदार पैदा हो गये हैं' – पद्मभूषण नीरज/311
अशोक 'अंजुम'

47. कवि शशांक प्रभाकर (पुत्र गोपालदास नीरज) से डॉ. एम. फ़ीरोज़ ख़ान की बातचीत/321
48. नीरज नामा/336
अशोक 'अंजुम'
49. महाकवि नीरज को भावभीनी श्रद्धांजली/168
डॉ. मनीष कुमार गुप्ता

खण्ड-ग (विविध)

1. मुस्लिम उपन्यासकारों के उपन्यासों में नारी/348
डॉ. मोहम्मद फ़ीरोज़ ख़ान
2. महाकाव्य 'रश्मिरथी' में पात्र परिकल्पना/354
प्रो. इन्दू यादव
3. मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में अभिव्यक्त जीवन संघर्ष/361
रचना
4. जनजातीय समाज में राम/368
डॉ. शालिनी मिश्रा
5. दुष्यन्त कुमार की ग़ज़लों की वर्तमान प्रासंगिकता/378
डॉ. अश्विनी कुमार पाण्डेय
6. अवतारी गीतकार नीरज के गीतों की प्रासंगिकता/383
अशोक कुमार प्रमाणिक
7. युग स्रष्टा एवं द्रष्टा गीतकार : गोपालदास 'नीरज'/388
संगीता कुमारी

कोई बात तो है नीरज के गुनगुनाने में

शिवचंद प्रसाद

गीतों के राजकुमार, मस्त फक़ीर, हरफ़न मौला और सर्वाधिक लोकप्रिय गोपालदास 'नीरज' मुख्यतः गीतकार के रूप में ख्यातिलब्ध हैं। लिखने की बात करें तो उन्होंने गीत, ग़ज़ल, मुक्तक, गीतिकाएँ (ग़ज़ल) और दोहे भी लिखे परन्तु प्रसिद्धि गीतकार के रूप में ही मिली है। निराला की ही तरह उनकी भी ज़िन्दगी की दास्तान 'दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही' जैसी ही रही। समस्त जीवन जटिल और संघर्षमय रहा। दुःखों ने साथ नहीं छोड़ा और समस्याओं ने चैन से रहने नहीं दिया। वही स्थिति बनी रही कि 'डॉसति ही गई रैनि बिरानी, कबहूँ नाथ नींद भरि सोयो।' दुःख हो या प्रेम की पीर वैयक्तिक समस्याएँ हों या समष्टि गत संघर्ष इनका 'नीरज' के साथ चोली-दामन का सम्बन्ध रहा है। यही कारण है कि नीरज को प्रेम के पीर का गीतकार या संघर्षों की वीर गाथाओं का महाकवि कहा जा सकता है। इनकी रचनाओं में 'पीर' (पीड़ा, वेदना) कॉमन है और यह व्यक्ति से समूह तक की यात्रा करती है। निजता से सामूहिकता तक का सफ़र है। कवि या गीतकार अपने लिए कम, आवाम के लिए अधिक चिंतित है। इसीलिए वह महान् है और महान् रचनाओं का जन्मदाता है। वह कबीर-सा जागता रहता है और जगत के लिए रोता रहता है। उसके दृष्टि-पटल पर मात्र व्यक्ति, देश, समाज की नहीं समूचा विश्व और मानवता है। उसका फलक राष्ट्रीय ही नहीं अन्तर्राष्ट्रीय है। विभिन्न शहरों और देशों के लिए लिखी उनकी 'पातियाँ' इसका प्रमाण हैं। युद्ध और शांति की चिंताएँ वरेण्य हैं। सुख-समता की कामनाएँ स्तुत्य हैं। अतः यूँ कहा जाय कि परिवेश और परिस्थितियों ने गोपालदास को 'नीरज' बनाया है। अतः इस दृष्टि से उनका संज्ञान लेना आवश्यक है।